Lakhon Nekiyan Aur Lakhon Gunah (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 221
Weekly Booklet : 221

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की

एक क़िस्त बनाम

लाखों नेकियां और लाखों गुनाह

सफ़हात 22

ईमान लाने के बा'द सह़ाबए किराम के जज़्बात 07
दुकान उलट दूंगा 12
कौन नेकी करने वाले की त़रह़ है ? 15
हर कलिमे पर साल भर की इबादत का सवाब 18

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **लाखों नेकियां और लाखों गुनाह**
सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर **1443** हि., नवम्बर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

लाखों नेकियां और लाखों गुनाह

येह रिसाला (**लाखों नेकियां और लाखों गुनाह**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' सफ़ह़ा 216 ता 233 से लिया गया है।

लाखों नेकियां और लाखों गुनाह

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला ''**लाखों नेकियां और लाखों गुनाह**'' पढ़ या सुन ले, उसे इ़ल्म व तक़्वा का पैकर बना और उस से हमेशा हमेशा के लिया राज़ी होजा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : ''जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 362/18، حدیث:928)

पढ़ते रहो दुरूदो सलाम भाइयो ! मुदाम फ़ज़्ले ख़ुदा से दोनों जहां के बनेंगे काम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत लज़्ज़त वाली इबादत है

नेकी की दा'वत देने में कभी भी सुस्ती नहीं करनी चाहिये अगर येह दीनी काम इख़्लास के साथ रिज़ाए इलाही के लिये किया जाए तो बेशक ख़ूब लज़्ज़त वाली इबादत है। चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का इर्शाद है : मैं ने इबादत की लज़्ज़त चार अश्या में पाई : ﴿1﴾ **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ की अदाएगी में ﴿2﴾

अल्लाह पाक की ह़राम की हुई चीज़ों से बचने में ﴾3﴿ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के हुसूल की ग़रज़ से नेकी का हुक्म देने में ﴾4﴿ **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब से महफ़ूज़ रहने के लिये बुराई से मन्अ़ करने में। (المنبہات، ص37)

नेकी की दा'वत से महरूमी की सूरत में मौत की तमन्ना

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबी **बकरह** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक मौक़अ़ पर फ़रमाया : किसी जानदार की मौत के बजाए मुझे अपनी मौत पसन्द है, येह सुन कर ह़ाज़िरीन ने घबरा कर अ़र्ज़ की : ऐसा क्यूं ? फ़रमाया : मुझे डर है कि कहीं जीते जी ऐसा ज़माना न देखूं जिस में **नेकी का हुक्म न कर सकूं और बुराई से मन्अ़ न कर सकूं** क्यूं कि ऐसे ज़माने में कोई ख़ैर (या'नी भलाई) नहीं। (شرح الصدور، ص11، ابن عساکر، 215/62)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ का भी क्या ख़ूब जज़्बा था ! कैसी मदनी सोच हुवा करती थी और **नेकी की दा'वत** से कैसा वालिहाना लगाव था कि उन के यहां नेकी की दा'वत के बिग़ैर गोया जीने का तसव्वुर नहीं था और एक आज हमारी ह़ालत है कि नेकी की दा'वत के हज़ार मवाक़ेअ़ मिलते हैं फिर भी परवाह नहीं की जाती। ह़ालां कि कई मवाक़ेअ़ ऐसे भी आ जाते हैं जिन में نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَرِ या'नी बुराई से मन्अ़ करना **वाजिब** हो जाता है मगर अफ़्सोस इस की त़रफ़ भी हमारी कोई तवज्जोह नहीं होती।

बद मज़्हबिय्यत से तौबा

नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने, मिले हुए जज़्बे को ख़ूब बढ़ाने, बद अ़क़ीदगी मिटाने की दिल में तड़प जगाने और बिगड़े हुए लोगों की इस्लाह़ का बाइ़स बन कर ख़ुद को जन्नत का ह़क़दार बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से

हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अमल करते रहिये, नेक आ'माल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ ''नेक आ'माल'' का जाएज़ा लेते हुवे उस का रिसाला पुर करते रहिये और हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ करवा दीजिये और अपने इस दीनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **मदनी बहार** सुनाऊं, एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मेरा उठना बैठना बद अक़ीदा लोगों के साथ था । कमो बेश 13 बरस उन की सोह़बते सरापा ज़लालत में रह कर मेरे अक़ाइद भी مَعَاذَاللّٰه उन्ही जैसे हो चुके थे और अमली ह़ालत भी कुछ अच्छी न थी, फ़िल्मों डिरामों और गानों बाजों का शैदाई था और मेरे चेहरे पर दाढ़ी भी सुन्नत के मुताबिक़ नहीं बल्कि ख़श्ख़शी थी । मेरे जनरल स्टोर के क़रीब वाक़ेअ **मस्जिद** में एक दीनी त़ालिबे इल्म इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने और ''बड़ों का मद्रसतुल मदीना'' पढ़ाने आया करते थे । ग़ालिबन सफ़र शरीफ़ 1420 हि. ब मुताबिक़ जून 1999 ई. का वाक़िआ है कि शह्र सत्ह़ पर दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की हमारे यहां धूम थी । उन्ही दिनों वोही दीनी त़ालिबे इल्म एक दूसरे इस्लामी भाई के हमराह मेरी दुकान पर

तशरीफ़ लाए, उन्हों ने मुझे सलाम किया मैं चूंकि दा'वते इस्लामी वालों को गुमराह समझने की वज्ह से उन्हें नफ़रत की निगाह से देखता था, इस लिये उन के सलाम का जवाब न दिया और NO LIFT करवाते हुए दुकान के सामान की सफ़ाई में मश्ग़ूल हो गया। उन्हों ने थोड़ा सा तवक़्क़ुफ़ किया (या'नी कुछ रुके) फिर बड़े नर्म लहजे में मुस्कराते हुए शह्र में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, जिसे क़बूल करने से मैं ने न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि उन्हें बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया। मेरे इस रवय्ये की वज्ह से उन के चेहरों पर उदासी छा गई मगर उन के सब्रो तह़म्मुल पे लाखों सलाम ! बेचारे ज़बान से कुछ न बोले। उन का येह अन्दाज़ ख़ासा **मुतअस्सिर** कुन था। जब शाम को दुकान बन्द कर के घर गया और रात के खाने से फ़ारिग़ हुवा तो मुझे उन दोनों आ़शिक़ाने रसूल का दा'वत देना याद आ गया मैं ने सोचा कि चल के देखूं तो सही येह लोग अपने इज्तिमाअ़ में करते क्या हैं ! चुनान्चे मैं यूं ही देखने के लिये चला गया और मैं देखने तो क्या गया, मेरा सोया हुवा नसीब अंगड़ाई ले कर जाग उठा ! اَلْحَمْدُلِلّٰه दौराने इज्तिमाअ़ मुझे जागती आंखों से मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की रूह़ परवर सुनह्री जालियों की ज़ियारत हो गई ! उस इज्तिमाअ़ में तशरीफ़ लाए हुए मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया। इज्तिमाअ़ के बा'द उन्हों ने शफ़्क़त भरे अन्दाज़ में मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश की जिस के नतीजे में **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की मैं ने निय्यत कर ली और जल्द ही मुझे **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ 3 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत नसीब हो गई। हमारा मदनी क़ाफ़िला एक मस्जिद में ठहरा। اَلْحَمْدُلِلّٰه पहली ही रात मुझ

गुनहगार पर करम बालाए करम हो गया। क्या देखता हूं कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ का सेहन है और मैं झाड़ू दे रहा हूं। इतने में **सुनहरी जालियां** खुलती हैं और उम्मत के ग़म ख़्वार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और मेरा नाम ले कर इर्शाद फ़रमाया : "**अपना अन्दर** (बातिन) **भी साफ़ करो।**" इस ख़्वाब से मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! हालां कि क़ब्ल अज़ीं मैं مَعَاذَاللهُ हयातुन्नबी का मुन्किर था और مَعَاذَاللهُ मेरा येह भी अक़ीदा था कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें देखते सुनते नहीं और न ही हमारी बातिनी हालत से आगाह हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुझ पर हक़ आशकार (या'नी ज़ाहिर) हो गया कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे नाम तो क्या, दिलों की कैफ़िय्यत से भी ख़बरदार हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने अक़ाइदे बातिला से सच्ची तौबा कर ली। वोह दिन और आज का दिन मेरे चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी है, सर पर इमामे का ताज और जिस्म पर सुन्नत के मुताबिक़ मदनी लिबास रहता है और हमारा सारा घराना मदनी रंग में रंग चुका है। **अल्लाह** की शान देखिये कि जिस आशिक़े रसूल ने मुझे दुकान पर आ कर दा'वत दी थी और जिन्हों ने बा'दे इज्तिमाअ़ मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई थी वोह तरक़्क़ी करते करते दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बन चुके हैं ! येह बयान देते वक़्त मैं तक़रीबन दस साल से **दीनी माहोल** में हूं और तीन साल से मुसल्सल मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत मुयस्सर हो रही है। इस दौरान तह़सील मुशारवत के निगरान की ज़िम्मेदारी और तीन बार **बंगलादेश** में आशिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र से मुशर्रफ़ हो चुका हूं। **अल्लाह** पाक मुझे दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए,

इख़्लास के साथ दीनी काम करने की सआ़दत और ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने की गली में शहादत नसीब करे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सीखने सुन्नतें, मस्जिद आओ चलें लाए हैं क़ाफ़िला आ़शिक़ाने रसूल
याद रखना सभी छोड़ना मत कभी दामने मुस्त़फ़ा आ़शिक़ाने रसूल
काश ! दुन्या में तुम दो ब फ़ज़्ले ख़ुदा दीं का डंका बजा आ़शिक़ाने रसूल

(वसाइले बख़्शिश, स. 489)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

क्या ख़ूब निराली शान है !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रह़मान की भी क्या ख़ूब निराली शान है ! जब किसी पर मेहरबान होता है तो अपनी रह़मत से उस की बिगड़ी हुई क़िस्मत संवार कर रख देता है, जो उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़्मत निशान से बे ख़बर होता है उस के दिल को बद अ़क़ीदगियों की आलाइशों से पाक कर के अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान करने वाला बना देता है, जैसा कि अभी आप ने मदनी बहार में मुलाह़ज़ा फ़रमाया। अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता, बे शुमार ऐसे अफ़राद जो मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मत का न सिर्फ़ इन्कार करते थे बल्कि आप से मुतनफ़्फ़िर व बेज़ार हो कर बर सरे पैकार रहते थे पाक परवर दगार ने उन को इस्लाम की दौलत से नवाज़ कर अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जां निसार बना दिया ! आइये **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल''** (274 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 78 ता 79 पर से इस त़रह़ के बा'ज़ ह़ज़रात के जज़्बात सुनते हैं :

ईमान लाने के बा'द सह़ाबए किराम के जज़्बात

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुमामा बिन उसाल यमामी जो अहले यमामा के सरदार थे, ईमान ला कर फ़रमाने लगे : "ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ (या'नी क़ाबिले नफ़रत) न था आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) है। **अल्लाह** पाक की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई दीन आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन से ज़ियादा बुरा न था, अब वोही दीन मेरे नज़्दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है। **अल्लाह** पाक की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई शह्र आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शह्र से ज़ियादा मबग़ूज़ (या'नी क़ाबिले नफ़रत) न था, **अल्लाह** पाक की क़सम ! अब वोही शह्र मेरे नज़्दीक सब शहरों से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) है।" (بخاری، 3/132، حدیث:4372) ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदतुना **हिन्द बिन्ते उ़त्बा** (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) जो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه का कलेजा चबा गई थीं, ईमान ला कर कहने लगीं : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ (क़ाबिले नफ़रत) न थे लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारे) नहीं।" (بخاری، 2/567، حدیث:3825) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللهُ عَنْه का बयान है कि (ग़ज़्वए) ह़ुनैन के दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमाया, ह़ालां कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ (सारी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा बुरे) थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक

कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में महबूब तरीन ख़ल्क़ (या'नी जहान में सब से प्यारे) हो गए। (ترمذی، 2/147، حدیث:666)

शराबे इश्क़े अहमद में कुछ ऐसी कैफ़ो मस्ती है कि जां दे कर भी इक दो घूंट मिल जाए तो सस्ती है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुझे तीन दिन धोबी का काम करना पड़ा !

हमारे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ज़ाहिरी के साथ साथ बातिनी तौर पर भी **नेकी की दा'वत** की तरकीब फ़रमाया करते थे, चुनान्चे इमामुत्ताइफ़ा हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के एक मुरीद जो कि बसरा शरीफ़ में गोशा नशीन थे, उन के दिल में एक रोज़ किसी **गुनाह** का ख़याल आया, इस बुरे ख़याल की नुहूसत से उन का **चेहरा सियाह पड़ गया,** वोह बड़े घबराए, तीन दिन के बा'द सियाही ख़त्म हो गई, उसी दिन उन के पीरो मुर्शिद का रुक़्आ मौसूल हुवा, उस में मरक़ूम (या'नी लिखा) था : अपने दिल को क़ाबू में रखो, तुम्हापे चेहरे की सियाही (कालक) धोने के लिये तीन दिन तक मुझे **धोबी का काम** करना पड़ा है। (تذکرۃ الاولیاء، ص18) **अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

पीरे कामिल की बरकतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस **हिकायत** से मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه पीरे रोशन ज़मीर थे, **अल्लाह** पाक ने उन को बहुत दूर की नज़र से नवाज़ा था जभी तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने बसरा शरीफ़ में मौजूद मुरीद के दिल की कैफ़िय्यत मुलाहज़ा फ़रमा ली, **सियाह चेहरा** भी देख लिया और दूर ही से बातिनी तवज्जोह डाल कर मुरीद के चेहरे की सियाही भी धो डाली ! इस **हिकायत** से येह भी

दर्स मिला कि कामिल पीर की बदौलत इन्सान गुनाहों से बचा रहता है और अगर कोई लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हो भी जाए तो **बि इज़्निल्लाह** पीरो मुर्शिद की तवज्जोह के सबब इस का तदारुक (या'नी इस्लाह़ का सामान) भी हो जाता है लिहाज़ा ज़रूर किसी कामिल पीर का मुरीद हो जाना चाहिये और येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ुदा की याद से मुंह पर एक ख़ास नूरानिय्यत का जल्वा नज़र आता है जब कि गुनाहों के इरतिकाब से दिल भी सियाह हो जाता और मुंह पर भी नुहूसत छा जाती है।

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म
मुरीदों को ख़त़रा नहीं बह़रे ग़म से कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म
निकाला है पहले तो डूबे हुओं को और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, स. 181)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऊंट जब चूहे का हो गया

किसी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हो जाने में और किसी के हो रहने में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ है चुनान्चे मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की सीरत पर मब्नी किताबे मुस्तत़ाब, "अख़्बारुल अख़्यार" में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसामुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़ालात में बयान कर्दा **दो दिलचस्प फ़र्ज़ी ह़िकायतों** के ज़रीए़ पीरे कामिल के ज़रीए़ मुरीद को पहुंचने वाले फ़वाइद समझे जा सकते हैं। चुनान्चे फ़रमाते हैं : एक **ऊंट** को चूहे ने जंगल में चरते देख कर कहा : ऐ ऊंट तुम किसी के हो रहो। ऊंट ने जवाब दिया : "मैं तुम्हारा हो गया।" एक दिन ऊंट किसी दरख़्त के हरे हरे पत्ते खा रहा था कि उस की नकील

(या'नी नाक की रस्सी) दरख़्त की शाख़ में बुरी त़रह़ अटक गई और ऊंट फंस कर आ़जिज़ हो गया। उस ने इस बुरे वक़्त में **चूहे** को पुकारा ! चुनान्चे वोह चूहा अपने दूसरे चूहों के साथ आया। सब ने मिल कर दरख़्त में फंसी हुई रस्सी कुतर दी, इस त़रह़ ऊंट ने नजात पाई। (اخبار الاخیار، ص177)

मेंडक को देख कर भाग खड़ा हुवा !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस फ़र्ज़ी ह़िकायत में निहायत दिलचस्प पैराए में समझाया गया है कि "आज़ाद" रहने के बजाए "किसी के हो रहो।" तो जो कोई शख़्स किसी पीरे कामिल का "हो रहता है" तो आड़े वक़्त कामिल पीर की बरकत से नजात का सामान हो जाता है। इस ज़िम्न में एक और **दिलचस्प ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये : एक मजलिस में चन्द अश्ख़ास जम्अ़ थे, अचानक एक **मेंडक** फुदक्ता हुवा आ निकला, येह देख कर एक दाना शख़्स उस मजलिस से भाग खड़ा हुवा। लोग (उस को बुज़दिल समझ कर) हंसने लगे। जब उस से मेंडक से डरने का सबब दरयाफ़्त किया गया तो उस दाना ने कहा कि मैं मेंडक से नहीं डरता, अलबत्ता इस बात से डरता हूं कि इस के पीछे कहीं कोई **सांप** न आ रहा हो ! इसी त़रह़ अगर कोई दरवेश ख़ुद कमज़ोर हो मगर उस का सिल्सिला निहायत मज़्बूत़ हो तो उस से डरना चाहिये क्यूं कि उस को रन्जीदा करने से उस के सिल्सिले के तमाम मशाइख़ कबीदा ख़ात़िर और रन्जीदा दिल हो जाएंगे। (اخبار الاخیار، ص176)

मुरीद की "पीठ मज़्बूत़" होती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मेंडक को सांप खा जाता है इसी लिये वोह दाना शख़्स मेंडक को देख कर भाग खड़ा हुवा कि कहीं ऐसा न हो कि इस का शिकार करने के लिये पीछे सांप लगा हो जो मुझे डस ले। येह मिसाल दे कर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ हुस्सामुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने

कमज़ोर दरवेश और उस के क़वी मुर्शिदीन की मिसाल दी है तो वाक़ेई जो आदमी किसी पीरे कामिल का मुरीद हो जाता है उस की "पीठ मज़्बूत" हो जाती है कि अगर उस का अपना पीर "कमज़ोर" हुवा भी तो क्या हुवा ! अपने पीर का पीर या फिर उस का पीर तो मज़्बूत होगा और यूं दुन्या व आख़िरत की भलाइयां हाथ आएंगी। **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" (561 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 260 ता 263 पर से बा'ज़ दिलचस्प व मा'लूमाती **अ़र्ज़ व इर्शाद** पेश किये जाते हैं सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

बैअ़त के मा'ना

अ़र्ज़ : बैअ़त के क्या मा'ना हैं ?

इर्शाद : बैअ़त के मा'ना "बिक जाना।"

सज़ाए मौत के मौक़अ़ पर एक मुरीद की अपने पीर से अ़क़ीदत

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया) **सब्अ़ सनाबिल** शरीफ़ में है : एक साह़िब को सज़ाए मौत का हुक्म बादशाह ने दिया। जल्लाद ने तलवार खींची, येह अपने शैख़ के मज़ार की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हो गए, जल्लाद ने कहा : इस वक़्त क़िब्ले को मुंह करते हैं। फ़रमाया : "तू अपना काम कर ! मैं ने क़िब्ले को मुंह कर लिया है।" और है भी येही बात कि का'बा क़िब्ला है जिस्म का और शैख़ क़िब्ला है रूह़ का। इस का नाम इरादत (या'नी मुरीदी) है ! अगर इस त़रह़ सिद्क़े अ़क़ीदत के साथ एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उस को फ़ैज़ ज़रूर आएगा। अगर इस का शैख़ ख़ाली है तो शैख़ का शैख़ तो ख़ाली न होगा और बिलफ़र्ज़ वोह भी न सही तो हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه तो मा'दिने फ़ैज़ (या'नी फ़ैज़ की कान) व मम्बए़ अन्वार (या'नी अन्वार का सर चश्मा) हैं उन से फ़ैज़ आएगा। (बस) सिल्सिला सह़ीह़ व मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) होना चाहिये।

दुकान उलट दूंगा

इस ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बयान फ़रमूदा एक ह़िकायत अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करता हूं कि एक फ़क़ीर किसी दुकान पर आया और कहने लगा : एक रुपिया दे ! दुकान दार ने इन्कार किया। फ़क़ीर ने कहा : रुपिया देता है तो दे वरना तेरी दुकान उलट दूंगा, लोग इकठ्ठे हो गए, इत्तिफ़ाक़न एक रोशन ज़मीर बुज़ुर्ग उधर आ निकले, उन्हों ने दुकान दार से फ़रमाया : इस को जल्द रुपिया दे दीजिये वरना दुकान उलट जाएगी, क्यूं कि मैं ने इस फ़क़ीर के बात़िन पर नज़र डाली कि कुछ है भी ! मा'लूम हुवा बिल्कुल "ख़ाली" है, फिर इस के पीर को देखा, उसे भी ख़ाली पाया, इस के पीर के पीर या'नी दादापीर को देखा तो वोह **अहलुल्लाह** से हैं और देखा कि वोह मुन्तज़िर खड़े हैं कि कब इस की ज़बान से निकले और मैं दुकान उलट दूं। येह ह़िकायत बयान कर के आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने फ़रमाया कि उस फ़क़ीर ने अपने पीर का दामन मज़्बूत़ी से थामा हुवा था।

क़ियामत तक आने वाले मुरीदीन

अइम्मए दीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِىَ اللهُ عَنْه के दफ़्तर (या'नी रजिस्टर) में क़ियामत तक के मुरीदीन के नाम दर्ज हैं जिस क़दर ग़ुलामी में हैं या आने वाले हैं। हुज़ूरे पुरनूर (ग़ौसे आ'ज़म) رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रब्बे करीम ने मुझे एक दफ़्तर अ़त़ा फ़रमाया कि मुन्तहाए नज़र (या'नी जहां तक नज़र जा सके वहां) तक वसीअ़ था और उस में क़ियामत तक के मेरे मुरीदीन के नाम थे और मुझ से फ़रमाया : "قَدْ وُهِبُوْا لَكَ (या'नी) येह सब तुम्हें बख़्श दिये (या'नी दे दिये) गए।" (بہجۃ الاسرار، ص193)

एक इश्काल और उस का जवाब

अ़र्ज़ : हुज़ूर ! येह तो जब्रन रुपिया लेना हुवा। उन **वलिय्युल्लाह** ने अगर उस की दुकान बचाने को देने की ताकीद फ़रमाई, मुम्किन था जैसे दफ़्ए़ ज़ुल्म के लिये रिश्वत देना मगर उस फ़क़ीर के दादापीर ने कि **अहलुल्लाह** से थे, इस ज़ुल्म की ताईद क्यूंकर रवा (या'नी जाइज़) रखी ?

इर्शाद : शरीअ़ते मुत़ह्हरा के दो हुक्म हैं : ज़ाहिर व बातिन, क़ाज़ी व आ़म्मए नास (या'नी आ़म लोग) उन की रसाई ज़ाहिर अह़वाल ही तक है, उन पर उस की पाबन्दी लाज़िम अगर्चे वाक़िफ़े ह़क़ीक़ते ह़ाल के नज़्दीक हुक्म बिल अ़क्स (या'नी उलट) हो।

ह़ैरत अंगेज़ मुक़द्दमए क़त्ल

(मज़ीद फ़रमाया) इस की नज़ीर (या'नी मिसाल) ज़मानए सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में वाक़ेअ़ हो चुकी। एक फ़क़ीर मुफ़्लिस, बे नवा, नाने शबीना (या'नी रात की रोटी) को मोह़ताज, शब को दुआ़ किया करता कि "इलाही रिज़्क़े ह़लाल अ़त़ा फ़रमा।" इत्तिफ़ाक़न किसी शब एक गाय उस के घर में घुस आई, येह समझा कि मेरी दुआ़ क़बूल हुई, येह रिज़्क़े ह़लाल ग़ैब से मुझे अ़त़ा हुवा है, गाय पछाड़ कर ज़ब्ह़ की, उस का गोश्त पकाया और खाया। सुब्ह़ को मालिक को ख़बर हुई। वोह सरकारे नुबुव्वत (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में नालिशी (या'नी फ़रियादी) हुवा। सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "जाने दे ! तू मालदार है उस मोह़ताज ने एक गाय ज़ब्ह़ कर ली तो क्या हुवा ?" वोह बिगड़ा और कहा : **या नबिय्यल्लाह !** मैं ह़क़ चाहता हूं। फ़रमाया : अगर ह़क़ चाहता है तो गाय उसी की थी। वोह और बरहम (या'नी ग़ुस्से) हुवा। फ़रमाया : न सिर्फ़ गाय (बल्कि) जितना माल तेरे पास है सब उसी का है। वोह और

ज़ियादा फ़रियादी हुवा तो फ़रमाया : तू भी उसी की मिल्क है और उसी का गुलाम है। अब तो उस की बेताबी की हद न थी। फ़रमाया : अगर तस्दीक़ चाहता है अभी हमारे साथ चल। उस फ़क़ीर और उस गाय वाले को हमराहे रिकाब (या'नी साथ) ले कर जंगल को तशरीफ़ ले गए। वाक़िआ अ़जीब था, ख़ल्क़ का हुजूम साथ हो लिया। एक दरख़्त के नीचे हुक्म दिया कि यहां खोदो। खोदने से **इन्सान का सर और एक ख़न्जर** जिस पर मक़्तूल का नाम **कन्दा** (या'नी लिखा) था, बर आमद हुवा। **नबिय्युल्लाह** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने उस दरख़्त से इर्शाद फ़रमाया : शहादत (या'नी गवाही) अदा कर तूने क्या देखा ? पेड़ ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह !** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) येह इस फ़क़ीर के बाप का सर है, येह गाय वाला उस का गुलाम था। इस (या'नी गाय वाले) ने मौक़अ़ पा कर मेरे नीचे अपने आक़ा (या'नी फ़क़ीर के वालिद) को उसी के ख़न्जर से ज़ब्ह़ किया और ज़मीन में मअ़ ख़न्जर (या'नी ख़न्जर के साथ) दबा दिया और उस के तमाम अम्वाल पर क़ाबिज़ हो गया। उस का येह बेटा बहुत सग़ीर सिन (या'नी कम उ़म्र) था, इस ने होश संभाला तो अपने आप को बेकस व बे ज़र (या'नी मुफ़्लिस व तंगदस्त) ही पाया और येह भी न जाना कि इस का बाप कौन था और उस का कुछ माल भी था या नहीं ? **हुक्मे बातिन** साबित हुवा, गुलाम (या'नी गाय वाला चूंकि फ़क़ीर के बाप का क़ातिल था इस लिये) गरदन मारा गया (या'नी क़त्ल किया गया) और वोह तमाम अम्वाल (जो गाय वाले के थे) विरासतन फ़क़ीर को मिले। (مثنوی شریف، دفتر سوم، ص224 تا242)

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह ह़िकायत बयान कर के फ़रमाया) वोही यहां भी मुम्किन कि दुकान दार इस फ़क़ीर के मूरिस (या'नी जिस का येह फ़क़ीर वारिस है) का मदयून (या'नी क़र्ज़दार) हो, अगर्चे वोह

फ़क़ीर भी उस से वाक़िफ़ न हो, न येह दुकान दार इसे पहचानता हो तो येह जब्रन दिलाना जब्र नहीं बल्कि حقّ بَحَقّ دارِ رَسانِیدَن (या'नी ह़क़दार को उस का ह़क़ पहुंचाना है) ।

हर हर ज़र्रा हर क़त़रा शाहिद है हर हर लम्ह़ा
उस की क़ुदरतो सन्अ़त का यक्ताई व वह़्दत का

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ط اٰمَنَّا بِرَسُوْلِ اللّٰہ

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

कौन नेकी करने वाले की त़रह़ है ?

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ الدَّالَّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ या'नी बेशक नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है । (ترمذی، 4/305، حدیث:2679) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला (और) मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तह़िक़ (या'नी ह़क़दार) हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/194)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ ! **''नेकी की दा'वत''** के दीनी काम में **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ जाइज़ त़रीक़े पर तआ़वुन करने वाला भी अज्रो सवाब का ह़क़दार होता है। इस में इस हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल की भी निय्यत की जा सकती है जैसा कि पारह 6 **सूरतुल माइदह** की आयत नम्बर 2 में इर्शाद है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ (پ6، المائدہ:2)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तमाम अ़मल करने वालों का सवाब

ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए उस को तमाम आ़मिलीन (या'नी अ़मल करने वालों) की त़रह़ सवाब मिलेगा और इस से उन (अ़मल करने वालों) के अपने सवाब से कुछ कम न होगा। और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और येह उन के गुनाहों से कुछ कम न करेगा। (مسلم، ص1438، حدیث:2674)

लाखों नेकियां और लाखों गुनाह

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह हुक्म (आ़म है या'नी) नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के सदक़े से तमाम सह़ाबा, अइम्मए मुज्तहिदीन, उ़लमाए मुतक़द्दिमीन व मुतअख़्ख़रीन सब को शामिल है मसलन अगर किसी की तब्लीग़ से एक लाख नमाज़ी बनें तो उस मुबल्लिग़ को हर वक़्त एक लाख नमाज़ों का सवाब होगा और उन नमाज़ियों को अपनी अपनी नमाज़ों का सवाब, इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सवाब मख़्लूक़ के अन्दाज़े से वरा है। रब्बे (करीम) फ़रमाता है : وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۚ (پ۲۹ القلم ۳) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है) ऐसे ही वोह मुसन्निफ़ीन जिन की किताबों से लोग हिदायत पा रहे हैं क़ियामत तक लाखों का सवाब उन्हें पहुंचता रहेगा, येह ह़दीस इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं : لَيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۙ (پ۲۷النجم ۳۹) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश) क्यूं कि येह सवाबों की ज़ियादती इस के अ़मले तब्लीग़ का नतीजा है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में गुमराहियों के मूजिदीन **मुबल्लिग़ीन** (या'नी

गुमराही ईजाद करने और गुमराही दूसरों को पहुंचाने वाले) सब शामिल हैं ता क़ियामत इन को हर वक़्त **लाखों गुनाह** पहुंचते रहेंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/60)

''नेक'' बनाने की मशीन बन जाइये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकियों के ह़रीस बन जाइये, दूसरों को नमाज़ी बनाने की मुहिम तेज़ से तेज़ तर कर दीजिये, जब भी नमाज़े बा जमाअ़त के लिये सूए मस्जिद जाने लगें, दूसरों को तरग़ीब दे कर साथ लेते जाइये, जिन्हें नमाज़ नहीं आती उन्हें नमाज़ सिखाइये। अगर आप के सबब एक भी नमाज़ी बन गया तो जब तक वोह नमाज़ें पढ़ता रहेगा उस की हर हर नमाज़ का आप को भी सवाब मिलता रहेगा। उ़मूमन इ़शा के बा'द कमो बेश 40 मिनट चलने वाले दा'वते इस्लामी के **बड़ों के मद्रसतुल मदीना** में दाख़िला ले लीजिये, इस में ख़ुद भी क़ुरआने करीम सीखिये और दूसरों को भी सिखाइये। आप से सीखने वाला जब जब तिलावत करेगा आप को भी उस की तिलावत का सवाब मिलता रहेगा। आप भी सुन्नतों पर अ़मल कीजिये और दूसरों को भी अ़मल पर आमादा कीजिये। अगर आप ने किसी को एक सुन्नत सिखा दी तो अब वोह जब जब उस सुन्नत पर अ़मल करेगा आप को भी उस सुन्नत पर अ़मल करने वाले की त़रह़ सवाब मिलता रहेगा। मदनी दौरा बराए **नेकी की दा'वत** और मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की ज़ोरदार मुहिम चला कर मुसल्मानों को ''नेक'' बनाने की ''मशीन'' बन जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه सवाब का अम्बार लग जाएगा और दोनों जहानों में बेड़ा पार हो जाएगा।

तेरे करम से ऐ करीम ! मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हर कलिमे पर साल भर की इबादत का सवाब और...

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई मुसल्मान **नेकी की दा'वत** देता है तो **अल्लाह** पाक की रह़मत जोश में आती है। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **एक** बार ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके। उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले एक एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है। (مکاشفۃ القلوب، ص48)

नेकियों का अम्बार

سُبْحٰنَ اللهِ ! अगर आप किसी को **नेकी की दा'वत** देंगे तो एक एक कलिमे (लफ़्ज़, क़ौल या बात) के बदले एक एक साल की इबादत का सवाब पाएंगे, फ़र्ज़ कीजिये ! आप ने किसी दिन मस्जिद में सिर्फ़ एक इस्लामी भाई के सामने "फ़ैज़ाने सुन्नत" से दर्स दिया और उस में दो सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाए, अब अगर उन में बीस बातें नेकी व भलाई की बयान हुईं तो दर्स सुनने वाला वोह इस्लामी भाई उन पर अ़मल करे या न करे आप के नामए आ'माल में اِنْ شَآءَاللهُ **बीस साल की इबादत का सवाब** लिखा जाएगा और अगर आप से दर्स सुन कर उस इस्लामी भाई ने अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया तो वोह जब तक अ़मल करता रहेगा आप को भी बराबर उस अ़मल करने वाले जितना सवाब मिलता रहेगा और अगर उस ने आप के दर्स से सीखी हुई कोई सुन्नत किसी और तक पहुंचाई तो इस का सवाब उस पहुंचाने वाले को भी मिलेगा और आप को भी। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللهُ आप का सवाब बढ़ता ही चला जाएगा। नेकी की दा'वत

का आख़िरत में मिलने वाला सवाब बन्दा अगर दुन्या ही में देख ले तो कोई लम्हा बेकार न जाने दे, हर वक़्त ही नेकी की दा'वत की धूमें मचाता रहे।

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं तू कर ऐसा जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दर्स देने का सवाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक **फ़ैज़ाने सुन्नत** से **दर्स** देना भी "नेकी की दा'वत" ही का एक ज़रीआ़ है। लिहाज़ा हिम्मत कीजिये, शैतान से पीछा छुड़ाइये, सुस्ती उड़ाइये और रोज़ाना कम अज़ कम "दो दर्स" ज़रूर दीजिये। मस्जिद दर्स, चौकदर्स, बाज़ार दर्स वग़ैरा में से कम अज़ कम किसी एक की तरकीब फ़रमाइये नीज़ वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना ज़रूर बिज़्ज़रूर घर दर्स के ज़रीए भी ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के मदनी फूल लुटाइये और ढेरों ढेर सवाब कमाइये। इस ज़िम्न में दो अहादीसे मुबारका सुनिये और झूमिये : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से **सुन्नत** क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह **जन्नती** है। (حلیۃ الاولیاء، 10/45، حدیث:14466) **दुआए मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** पाक उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।" (ترمذی، 4/298، حدیث:2665)

दर्स की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत का जज़्बा बढ़ाने के लिये आइये ! आप को एक मदनी बहार सुनाता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : 1410 हि. ब मुताबिक़ 1990 ई. की बात है कि मैं एक जगह मुलाज़मत करता था। इसी दौरान दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई भी वहीं मुलाज़िम हुए। एक बार मैं ने उन से कहा कि किसी ऐसी किताब की तरफ़ मेरी

रहनुमाई फ़रमाइये जिसे पढ़ कर इस्लामी तर्ज़ पर ज़िन्दगी गुज़ारी जा सके। उन्हों ने कहा कि आप दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" ख़रीद फ़रमा लीजिये। बात आई गई हो गई। ज़िन्दगी का पहिय्या अपनी तेज़ रफ़्तारी से घूमता रहा, गर्दिशे लैलो नहार से बे ख़बर मैं मा'मूल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा और दुन्यावी मसरूफ़िय्यात की वज्ह से वोह किताब न ख़रीद सका। कुछ अ़र्से बा'द ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं मुस्तक़िल तौ़र पर दूसरे शह्र मुन्तक़िल हो गया। एक रोज़ नमाज़े मग़रिब के लिये एक मस्जिद में गया तो नमाज़ अदा करने के बा'द मैं ने देखा कि सफ़ेद लिबास जैबे तन किये सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक इस्लामी भाई किसी किताब से दर्स दे रहे थे और कई इस्लामी भाई दर्स सुनने में मसरूफ़ थे। मैं भी उस दर्स में बैठ गया, जब मेरी नज़र उस किताब पर पड़ी जिस से वोह इस्लामी भाई दर्स दे रहे थे तो उस पर "फ़ैज़ाने सुन्नत" लिखा था, जिसे देख कर मेरा ज़ेह्न माज़ी के धुंदलकों में खो गया और मेरे ज़ेह्न के पर्दे पर येह बात उभरी कि येह तो वोही किताब है जिसे ख़रीदने का मुझे फ़ुलां इस्लामी भाई ने मश्वरा दिया था। दर्स के बा'द मैं ने इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात की और उन से "फ़ैज़ाने सुन्नत" मुताल़आ करने के लिये मांगी, उन्हों ने दे दी। इस का मुताल़आ करने से मेरे अन्दर सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा पैदा हुवा और اَلْحَمْدُلِلّٰه रफ़्ता रफ़्ता दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सुन्नतों पर अ़मल के लिये कमर बस्ता हो गया। नीज़ मेरे साथ साथ मेरे तीन भाई भी اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए।

न नेकी की दा'वत में सुस्ती हो मुझ से बना शाइ़क़े क़ाफ़िला या इलाही
सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की रोज़ाना दो मर्तबा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुआए मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم

अल्लाह पाक उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए ।

(ترمذی،4/298،حدیث:2665)

978-969-722-250-6
01082255

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net